आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

- पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी की जनचेतना की दृष्टि से साहित्येतिहास के शोधकर्ता, व्याख्याता, मर्मी-विचारक, उपन्यासकार, ललित निबंधकार, संपादक तथा बसुश्रुत आचार्य के रूप में मान्य है |
- "सूर साहित्य" द्विवेदी जी की प्रथम रचना है, इसमें उन्होंने 'प्रेमतत्व' की जो व्याख्या की है और जयदेव, विद्यापति तथा चंडीदास की राधा के साथ सूर की राधा के प्रेम का जो सूक्ष्म-पार्थक्य दिखाया है, उससे उनका समीक्षक स्वरूप प्रकट हुआ है |
- "हिंदी साहित्य की भूमिका" (1940 ई.) में द्विवेदी जी के साहित्यिक व्यक्तित्व को व्यापक स्वीकृति मिली, लेकिन उनका आलोचक व्यक्तित्व दब- सा गया है |
- "कबीर" (1941 ई.) पुस्तक के माध्यम से द्विवेदी जी का समीक्षक रूप उभर कर सामने आया |
- "हिंदी साहित्य का आदिकाल" (1952 ई.) ऐतिहासिक आलोचना कृति है | इसमें द्विवेदी जी ने हिंदी के आरंभिक साहित्य संबंधी उलझनों का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |
- "कालिदास की लालित्य योजना" (1965 ई.) में पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कालिदास के माध्यम से भारतीय सौन्दर्य दृष्टि की व्याख्या की है |
- पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'साहित्य का प्रयोजन' मनुष्य को संकीर्णता से उठाकर उदार और विवेकशील बनाना है | दूसरे शब्दों में साहित्य का लक्ष्य मनुष्य को सर्वांगीण विकास की दिशाएं प्रदान करना है |
- पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – "भाववेग कल्पना और पदलालित्य को 'कविता' कहा जा सकता है |
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'काव्य-सिद्धांत' साहित्य का मूल्यांकन नहीं, साहित्य मूल्यों की व्याख्या है |
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने "साहित्यकार का दायित्व" मनुष्यता का उन्नायक होना माना है, उन्होंने कहा है-" सारे समाज को सुंदर बनाने की साधना का नाम 'साहित्य' है" |
- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की भाषा संबंधी निश्चित मानता थी कि वह सरल और सहज हो, ताकि साहित्य सरलतापूर्वक समझा जा सके | इसलिए उन्होंने निराला की दुर्गम व दुरूह भाषा-शैली का विरोध किया |